सुशील जोशी

चिड़िया धूल में क्यों नहाती है?

यह तो सबने देखा है कि कई पक्षी धूल में पंख फड़फड़ाते हैं और इतनी ज़ोर से फड़फड़ाते हैं कि उनका पूरा शरीर धूल में सन जाता है। इंसान का बच्चा ऐसा करे तो पिटाई होगी मगर वैज्ञानिक लोग कहते हैं कि चिड़िया धूल में नहा रही है। वे तो यह भी कहते हैं कि इससे चिड़िया को बहुत फायदा होता है। चिड़िया का धूल स्नान देखकर किसी ने इसका सम्बन्ध आने वाले मौसम से भी जोड़कर कहा है:

अण्डा ले चींटी चढ़े चिरिया न्हावे धुर, तो बरखा भरपूर।

चिड़िया धूल में नहाए तो उसे कुछ फायदा हो न हो, भरपूर बारिश की उम्मीद की जा सकती है। वैसे यह तो कहावत है, किसी ने इसकी जाँच नहीं की है।

पक्षियों से प्रेम करने वाले बताते हैं कि कम से कम 200 प्रकार के पक्षी धूल स्नान करते हैं। इनमें गोरैया के अलावा मुर्गियाँ, तीतर-बटेर, बया वगैरह भी शामिल हैं। पक्षियों के जीवन में धूल स्नान के महत्व को देखते हुए पक्षियों से सम्बन्धित कई किताबों में पक्षी प्रेमियों को यह सलाह दी जाती है कि यदि वे चाहते हैं कि पक्षी उनके घर आएँ, तो उनके लिए दाने-पानी के अलावा धूल स्नान की जगह भी बनाएँ। तो मेरे मन में सवाल यह आया कि पक्षी ऐसा करते क्यों हैं? या उन्हें इससे क्या फायदा होता है?

मुझे इसके बारे में ज़्यादा पता नहीं चला मगर इतना ज़रूर पता चला कि कई जानवर खुद को साफ रखने के कई उपाय करते हैं। जैसे, बिल्लियाँ जीभ-स्नान करती हैं। रोज़ाना कई बार बिल्ली अपने बदन को चाटती है। यह भी एक किस्म का स्नान है। इस तरह बिल्ली अपने बदन के अधिकांश हिस्सों को तो चाट लेती है, मगर सिर और कान के पीछे जैसे कुछ हिस्से वह चाट नहीं पाती है। इनकी सफाई के लिए वह पहले अपने पंजे को जीभ से गीला करती है और फिर उस पंजे से इन जगहों की सफाई करती है। चमगादड़ भी ऐसा ही करते हैं। सबसे अचरज की बात तो यह पता चली कि मछलियों को भी कुछ जुगाड़ करना पड़ता है। तुम्हें भी अचरज हो रहा होगा कि पानी में रहने वाली मछली को भी खुद की साफ-सफाई का इन्तज़ाम करना पड़ता है। मैंने पढ़ा कि इसके लिए मछली पानी में किसी पेड़ या चट्टान वगैरह से घिसटकर तैरती है।

मगर चिड़िया पर लौटना चाहिए। ऐसा बताते हैं कि धूल स्नान करने से पक्षी शरीर पर बसने वाली जुँओं, पिस्सुओं वगैरह से निजात पा लेते हैं। होता यह है कि जब पक्षी अपने पंख खोलकर धूल में फड़फड़ाते हैं तो खूब धूल उड़कर उनके "रोम-रोम" में घुस जाती है। यह धूल पंखों में फँसी जुँओं और पिस्सुओं के साँस लेने के छेदों में भर जाती है और उनका दम घुट जाता है। जी भरकर धूल उड़ा लेने के बाद पक्षी फिर से पंख फड़फड़ाते हैं जिससे धूल के साथ-साथ कीड़े वगैरह भी झड़ जाते हैं। वैसे धूल स्नान जुँओं वगैरह से मुक्ति दिलाता है इसका कोई प्रमाण नहीं है।

यहाँ एक बात बताना बहुत ज़रूरी है। पक्षियों में दो तरह के पंख होते हैं। एक वे जो उनके परों या डैनों के हिस्से होते हैं। ये उड़ने के काम आते हैं। दूसरी तरह के पंख पूरे शरीर पर फैले होते हैं। इन्हें अँग्रेज़ी में बॉडी फेदर (body feather) कहते हैं। जब पक्षी धूल स्नान करते हैं तो वे कोशिश करते हैं कि ये बॉडी फेदर रोंगटों की तरह खड़े हो जाएँ और चमड़ी खुल जाए ताकि धूल चमड़ी तक पहुँचे।

वैसे एक कारण और पता चला। पक्षियों के पंखों के नीचे तेल ग्रंथि होती है जिससे तेल निकलता रहता है। यह तेल अपने आप पंखों पर फैलता है और पक्षी अपनी चोंच की मदद से भी इसे सारे पंखों पर फैलाते हैं। पानी में रहने वाले पक्षियों के लिए तो यह तेल प्राणरक्षक होता है। इसी के कारण उनके पंख पानी में भीगते नहीं हैं। मगर ज़मीन पर रहने वाले पक्षियों में भी तेल निकलता रहता है। कई बार पंखों पर बहुत ज़्यादा तेल हो जाता है। धूल में नहाकर वे इस अतिरिक्त तेल से मुक्ति पा लेते हैं। एक प्रयोग में देखा गया कि यदि बटेर को धूल स्नान न करने दिया जाए तो उनके पंख तेलीय हो जाते हैं और उलझ जाते हैं।

यह भी बताते हैं कि तेल ज़्यादा हो तो परजीवी कीट ज़्यादा आते हैं। परजीवी मतलब ऐसे कीट जो पक्षी को नुकसान पहुँचाते हैं। ये पक्षी का खून तक चूस सकते हैं या सिर्फ खुजली पैदा कर सकते हैं। मगर होता यह है कि अच्छे धूल स्नान के बाद सारा तेल हट जाता है। तब पक्षी अपनी पूँछ के पास स्थित तेल ग्रंथि से चोंच को भिगो-भिगोकर पूरे शरीर के पंखों की तेल मालिश करता है। यानी स्नान के बाद सजने का भी रिवाज़ है पक्षियों में।

धूल स्नान का एक फायदा यह भी बताया जाता है कि इससे शरीर के तापमान को नियंत्रित किया जाता है। वैसे यह बात मेरे गले नहीं उतरी। यह भी कहते हैं कि जब पक्षी की चमड़ी पर खुजली या जलन होने लगती है तो वह धूल स्नान करता है ताकि वह पदार्थ हट जाए जो तकलीफ दे रहा है।

बस अभी तो इतना ही पता चला है। और चलेगा तो फिर बताऊँगा।

व्हाइट आइड

बुलबुल के बच्चे

बुलबुल के थे अण्डे तीन
उनसे निकले बच्चे तीन।
माँ उनको नादान समझती
लेकिन वे हैं बड़े ज़हीन।
कल तक देख नहीं पाते थे
चीं चीं चीं चीं चिचियाते थे।
लेकिन आज इरादे उनके
उड़ जाएँ लंका या चीन।
लगने लगा घोंसला छोटा
दाने दुनके का भी टोटा।
चोंच खोल चिल्लाते रहते
खाने के बेहद शौकीन।
जब कोई भी आहट आती
गर्दन तान फुलाते छाती।
चुप रहना या पीछे हटना
लगे उन्हें अपनी तौहीन।

गिरिजा कुलश्रेष्ठ

चित्र - जीतेन्द्र ठाकुर